सिपाही का पत्र

– शिवमंगल सिंह 'सुमन'

इस कविता में कवि ने देश की रक्षा के लिए सीमा पर तैनात सिपाही की भावना को पत्र के माध्यम से व्यक्त किया है। सिपाही अपने देशवासियों को लिखता है कि मैं यहाँ विश्व शांति के लिए लड़ रहा हूँ। पत्र लिखते समय उसकी आँखों के सामने अपना गाँव, परिवार और घर घूमने लगता है। उसे अपनी माँ की याद आती है। जो उसकी राह देख रही है। वह माँ को तथा अपने देशवासियों को विश्वास दिलाता है कि वह अपने देश का गौरव बढ़ाएगा। देश सेवा की भावना से सीमा पर कर्त्तव्यरत सिपाही की भावना का सहज व मार्मिक चित्रण इस कविता में किया गया है।

मेरे देशवासियो,
पत्र लिख रहा हूँ तुम्हें मौत के बहाने से
गंगा –जमुना और ब्रम्हपुत्र के मुहाने से
मूल्य मानवता के
समूल नष्ट करने को
उद्यत है अनाचार
सत्य, प्रेम, आस्था के
मानदण्ड पर प्रहार,
दो की लड़ाई नहीं
सरहदी झगड़ों की
प्रश्न है कि विश्वशांति
कुत्तों की मौत मरे या कि जिए
जीवन के तत्वों की महिमा प्रशस्त किए,
युद्ध यह नहीं है
राम काज है हमारे लिए,
''समर मरण पुनि सुरसरि तीरा
राम काज क्षणभंगु शरीरा''
नाम क्या बताऊँ बंधु
पुत्र दीन का
पाला गया
आहों और आँसुओं की तोल पर
जीवन के अभावों से
जूझता, झुलसता
विगलित विश्वासों और
करुणा के मोल पर
ग्राम का पता क्या दूँ ?
भारत के सारे ग्राम एक से ही दिखते हैं
गलियारा, बैलगाड़ी, झोपड़ियाँ फूस की
खेतों की मेड़ों पर फसलों की खिलखिलाती
लहँगों की लहरों पर झूमती चुनरियाँ,
संध्या की लाली में नहाती – सी
रँभाती गाय, बछड़ों को चाटती।
तीन दिन हुए आज खंदक में पड़े–पड़े
आग, धुएँ, विस्फोट मौत के साए में ।
एक प्रहर से कुछ– कुछ शांत है वातावरण
शांत जिसे सैनिक शांति कहते हैं
वर्ना कराहों से कान फटे जाते हैं
भेड़ियों के दाढ़ों की दरारें दरदराती हैं
बर्फ की पर्तें पड़ रही हैं ओवरकोट पर
ठिठुरन सी दौड़ गई हड्डी तक
मज्जा भी जमती सुन्न होती नजर आती है
गरमी के नाम पर
माँ के ममत्व और
प्रीति–भीति परिणीता की स्मृति ही शेष है

चिड़ियों की चह-चह के साथ-साथ
किलक-किलक उठती हँसी
दुध मुँहे नटखट की।
दिख रही है माँ की
डबडबाई आँख
डूबता दिल
पंचायत का रेडियो ही जिसका सहारा है
टूटी खटिया में पड़ी
ताक रही आसमान
आँगन के बीचों-बीच चमक उठा तारा है,
कोई कहला दे उसे
माँ तू न धीरज खो
शीष पर मेरे
तेरे आशीष की छाया है,
तेरा ही नाम ले लेकर तो जूझ रहा
नरमेधी गिद्धों के पंजे मरोड़ता
चट्टानी चोटों से खूनी चंचु तोड़ रहा,
दूध की खाकर शपथ
कहता हूँ हे अम्बे!
वीर माताओं का विरद न खो दूँगा
लौटा तो मिलूँगा ललक
मस्तक पर चरणरज
मल-मलकर, पुलक-पुलक
अथवा माँ
पुण्य कोख तेरी
कलंकित न होने दूँगा।
कौन तुम?
माँ के पास खड़ी-खड़ी सिसक रहीं
हिचकियाँ लेती ओ
जल-जल पिघलती मोमबत्ती-सी
झंझा में झकझोरी पीपल की पत्ती सी,
तुमसे आशाा न थी
कातर बनोगी यों
ऐसा दिल छोटा करोगी इस दुर्दिन में
कातर बनोगी यों
ढालोगी अमंगल अश्रु
मंगलमय क्षण में,
पूजा का समय है
खुल गए कपाट चण्डी के
लाओ अगरू, अक्षत औ, रक्तकमल
रक्त सीकरों से सिच-सिंचकर जो खिलता है
एक का प्रश्न नहीं
राष्ट्र पर संकट है
मेरे समान ही सहस्त्रों
बलि होने को
होड़ कर रहे हैं यहाँ
ऐसा सौभाग्य
बड़ी मुश्किल से मिलता है।
एक छटपटाहट - सी
मुझको भी मथ रही
मिटने के पूर्व
एक बार तुम्हें पाने की
रागमयी सिंदूरी आभा की लहरों में
डूब-डूब जाने की,
समय नहीं सोचने का
बलिदानी बेला में
राष्ट्र के महान मुक्तिपर्व
खेल-खेला में,
मुझे प्यार करती हो तो
इतना ही करना प्रिय
बच्चों को अनुभव न हो अनाथपन का,
बड़े होकर गर्वित हो
लेकर पिता का नाम
बार-बार पुलकित हो रोम -रोम उनका,
करुणामयी, घूँटो अश्रु
कठिन क्षण परीक्षा का

फिर विकल्प कैसा है?
नारी का भाग्य
सदा से ही रहा सा है
भीतर से जलती औ
बाहर मुस्कराती हुई
गौरव बढ़ा दो मेरे पौरुष पूर्ण प्रण का,
आग से खेलना
सिखाओ नन्हे-मुन्नों को
भावी संतानों को दाय यही देनी है,
शौर्य-धैर्य उत्सर्ग युग की त्रिवेणी है।
आऊँगा, आऊँगा
निश्चय ही आऊँगा
विजयी तिरंगे की तरह फरफराता
अर्जुन की कौल
आज थिरक रहा जिह्वा पर
दीन न बनूँगा और
पीठ न दिखाऊँगा,
लाऊँगा, लाऊँगा
रण की बहुमूल्य भेंट
रुद्ध राष्ट्र-गौरव के मुक्ति गीत गाता।
संयति जल रहा हूँ,
हिम-मण्डित शिखों पर दीप्त
अमा के अँधेरे को
दलता, ललकारता
अमर राष्ट्र के
अचल सुहाग की अखण्ड ज्योति
उष्ण रक्त के
अमोघ अर्घ्य से सँवारता ।

अभ्यास :

बोध प्रश्न

1. सिपाही ने अपना पत्र किसको सम्बोधित करते हुए लिखा है?
2. पंचायत का रेडियो किसका सहारा है?
3. सिपाही अपना पत्र कहाँ से लिख रहा है?
4. सिपाही युद्ध को राम-काज के रूप में क्यों स्वीकार करता है?
5. अपनी माँ को विश्वास दिलाते हुए सिपाही क्या कहता है?
6. सिपाही अपने बच्चों को क्या सिखाना चाहता है?
7. ''ऐसा सौभाग्य बड़ी मुश्किल से मिलता है'' इस पंक्ति का आशय स्पष्ट कीजिए।
8. सिपाही अपनी उदास पत्नी के प्रति क्या भावना व्यक्त करता है?
9. इस कविता के आधार पर युद्ध क्षेत्र का वर्णन अपने शब्दों में कीजिए ।

योग्यता विस्तार

1. शहीदों के विषय में जानकारी एकत्र कर उनका परिचय अपने शब्दों में लिखिए ।
2. भारतीय स्वतंत्रता आन्दोलन के अमर शहीदों के चित्र खोजकर अपने कक्षा एवं अध्ययन-कक्ष में लगाइए।
3. अपने भाई को पत्र लिखकर इस कविता का सार बताइए।
4. मध्यप्रदेश के चार कवियों एवं उनकी रचनाओं के नाम लिखिए।

शब्दार्थ

मुहाने – किनारे, समूल – जड़ सहित, सरहद – सीमा, सम्प्रति – वर्तमान, हिम मण्डित-बर्फ से ढँके, अमा – अमावस्या